RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.01 | January 2022 | pp. 112-118
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Marking of Natives in Vakataka period murals of Ajanta
अजन्ता के वाकाटककालीन भित्ति चित्रों में जातकों का अंकन

*Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

Abstract

The Ajanta paintings are mainly intended to depict various aspects of the life of Lord Buddha. The rest of the space between the stories has been decorated with vines, animal birds, geometric figures and other varied forms. Cave No. 9, 10, 19, 26 of the thirty caves of Ajanta are chaitya mandapas, while the rest are sangarams or viharas. At present there are only six cave paintings, in which cave nos.- 1,2,9,10,16 and 17 are there. From the point of view of time, these paintings are divided into three categories – Satavahana period paintings, Vakataka period paintings and Vakatota period paintings. The oldest paintings are of caves 9 and 10, which are related to the Hinayana sect.

Keywords: *Shankhpal, Mahajanak, Shiva, Champeya, Mahaummag, Hasti, Vishvantara, Shadant, Hans, Sutsom, Sharam, Mahakapi Matrinushak, Deer, Nyagrodha*

Abstract in Hindi

अजन्ता के चित्रों का प्रायोजन मुख्यतः भगवान बुद्ध के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अंकन है। कथांकनों के अनन्तर शेष स्थान को लतापत्रक, पशुपक्षियों ज्यामितिक आकृतियों तथा अन्य वैविध्यपूर्ण रूप सज्जा से अलंकृत किया गया है। अजन्ता के तीस गुफाओं में गुफा सं0– 9,10,19,26 चैत्य मण्डप हैं, जबकि शेष संघाराम अथवा विहार हैं। वर्तमान में मात्र छः गुफाओं के चित्र अवशेष हैं, जिनमें गुफा सं0–1,2,9,10,16 व 17 हैं। काल की दृष्टि से इन चित्रों को तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है–सातवाहन कालीन चित्र, वाकाटककालीन चित्र तथा वाकाटकोत्तरकालीन चित्र। सर्वाधिक प्राचीन चित्र गुफा सं0 9 व 10 के हैं, जो कि हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।

Keywords: *शंखपाल, महाजनक, शिवि, चांपेय, महाउम्मग, हस्ति, विश्वंतर, षडदन्त, हंस, सुतसोम, शरम, महाकपि मातृपोषक, मृग, न्यग्रोध।*

Article Publication

Published Online: 20-Jan-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

dr.dubey80@gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i01.016

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

अजन्ता की अधिकांश गुफाएँ वाकाटक काल में ही निर्मित हुई। गुफा संख्या 16 वाकाटकों की वत्सगुल्म शाखा के अन्तिम ज्ञात नरेश हरिषेण (475ई0–500ई0)के सचिव वाराहदेव द्वारा निर्मित करवाई गयी, जबकि 17वीं और 19वीं गुफा हरिषेण के एक मांडलिक ने खुदवाई थी[1]। गुफा संख्या 16 के बरामदें की वाहरी दीवार पर वाकाटक राजा हरिषेण का लेख अंकित है, जिसमें वर्णित है कि यह गुफा तापसों (भिक्षुओं) के निवास हेतु निर्मित करवाई गयी[2]। गुफा संख्या 1 अजन्ता के अलंकर समीप जंजाल नामक ग्राम में स्थित वाकाटककालीन घटोत्कच गुफा के सदृश योजना तथाण के आधार पर वाकाटक काल की मानी जाती है[3]। वाकाटककालीन चित्रों को विषय वस्तु के आधार पर तीन श्रेणियों में बाटा गया है[4]:–

1- बुद्ध जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ
2- जातक कथाएँ
3- प्रकीर्ण

जातक कथाओं में शंखपाल, महाजनक, शिवि, चांपेय, महाउम्मग, हस्ति, विश्वंतर, षडदन्त, हंस, सुतसोम, शरम, महाकपि, मातृपोषक, मृग, न्यग्रोध, आदि जातकों का चित्रण है।

[1] वाचस्पति गैरोला, भारतीय संस्कृति और कला, पृ0–192
[2] वासुदेव उपाध्याय, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, पृ0–156
[3] अजयमित्र शास्त्री, अजंता, पृ0–80
[4] वही।

गुफा क्रम0–1

1. शिवि जातकः–

शिवि जातक की कथा राजा शिवि के रूप में जन्में बोधिसत्व की है, जो अपनी दयालुता के कारण बडे प्रसिद्ध थे। एक बार एक कबूतर की प्राण रक्षा हेतु अपने शरीर का मॉस काटकर दे दिया था। परन्तु यहॉ जातक कथा के बजाय महाभारत तथा सूत्रालंकार में वर्णित कथानक का अनुसरण चित्रकार द्वारा किया गया है। पहले दृश्य में एक नीले व सफेद रंग का कबूतर राजा की गोद में शरण लेता हुआ प्रदर्शित है। दूसरे दृश्य में राजा शिवि तराजू के पलडे के पास खड़ा है। राजा स्त्रियों से घिरा हुआ अंकित है। यहॉ बाज अनुपस्थित है। ऐसा लगता है कि अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए उसने मानवीय रूप धारण कर लिया होगा। अन्तिम दृश्य में राजा साधु सन्यासियों से घिरा चित्रित है, वे राजा की करूणा के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति के उद्देश्य से फूल आदि का उपहार दे रहे है[5]। इस चित्रांकन में चेहरे अपेक्षाकृत लम्बे हैं, ऑखें भावहीन तथा नाक लम्बी है। दृश्य संयोजन भी योजनाबद्ध नहीं है। वास्तु के अंकन में भी सूक्ष्मता का अभाव है। इस आधार पर अजयमित्र शास्त्री ने इसे वाकाटक काल के अन्तिम भाग का माना है[6]।

2. शंखपाल जातक :–

मण्डप के बाईं ओर की भित्ति पर शंखपाल जातक का चित्रण है। यह जातक कथा बोधिसत्व के नागरूप में जन्म लेने व देह त्याग करने की घटना के सम्बन्ध में है। चित्र का अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है, किन्तु शेष भाग अब भी दर्शक के मन पर गम्भीर छाप छोड़ता है। बाईं ओर के ऊपरी भाग में नागराज एक भिक्षु से उपदेश ग्रहण करते चित्रित है। उपदेश सुनने वालों में एक स्त्री दर्शकों की ओर पीठ किए चित्रित है, इसके बैठने की मुद्रा बड़ी लुभावनी है। दाईं ओर शिकारियों द्वारा ले जाया जाता हुआ शंखपाल तथा उसी के नीचे शंखपाल को छोड़ने की प्रार्थना करता आलार चित्रित है। निचले भाग में बाईं ओर शंखपाल मानव रूप में अपने उद्धारक आलार को झील की ओर ले जा रहा है।[7] इस कथानक के चित्रांकन में आकृतियों का सौष्ठव दर्शनीय है। शंखपाल तथा उसके पीछे बैठी राजपरिवार की स्त्रियॉ अत्यंत समानुपातिक ढंग से चित्रित की गईं हैं। उपदेश सुन रही स्त्री का बायां हाथ जमीन पर टिका है, दोनों पैर पालथी मुद्रा में कुछ उठे हुए तथा दायां हाथ कोहनी से ऊपर मुड़ा हुआ सिर को सहारा देने की मुद्रा में चित्रित हैं। अजयमित्र शास्त्री इसे संसार के सर्वश्रेष्ठ चित्रों में गणना करते हैं।[8]

3.महाजनक जातक :–

इस कथा के अनुसार एक बार मिथिला के राजा को युद्ध में उसी के भाई द्वारा मार डाले जाने पर उसकी रानी अपने बच्चे के साथ चुपचाप चम्पा चली जाती है। वही बच्चा महाजनक बड़ा होकर व्यापार आरम्भ करता है तथा एक बार सुवर्णभूमि के लिए जहाज से यात्रा करता है, परन्तु जहाज मार्ग में दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। दैवीय कृपा से महाजनक के प्राणों की रक्षा होती है तथा वह मिथिला पहुच जाता है। जहॉ उसने एक अनाथ कन्या सीवली से विवाह कर लिया, किन्तु कुछ दिनों पश्चात् उसे बैराग्य हो जाता है तथा वह दीक्षा लेना चाहता है। सीवली महाजनक का चित्त परिवर्तित करने के कई प्रयास करती है, परन्तु असफल रहने पर स्वयं भी सन्यास ले लेती है। इस कथा का अंकन समुचित क्रम से नहीं हो पाया है। दायी ओर दुर्घटनाग्रस्त जहाज तथा बाईं ओर सीवली द्वारा महाजनक को भौतिक सुखों की ओर आकर्षित करने के प्रयत्न चित्रित हैं[9]। चित्र में एक राजपुरूष सौन्दर्यवती स्त्री के साथ भव्य वितान के नीचे बैठा हुआ अंकित है। एक नर्तकी भावपूर्ण मुद्रा में नृत्य करते चित्रित है। राजा जड़ाऊ किरीट, कर्णोभूषणों, मुक्ताहार, केयूर तथा कटक से विभूषित है, जो अत्यन्त कलात्मक रूप से चित्रित किए गए हैं। रानी की मुद्रा तथा वस्त्राभूषण उसके भावों के अनुरूप तथा अनुराग युक्त है, जबकि महाजनक अलिप्त रूप से शान्त भाव में है। अन्तिम दृश्य में राजा घोड़े पर सवार होकर राजधानी छोड़ रहा है तथा सीवली उसका अनुसरण कर रही है। सम्पूर्ण चित्रांकन कलाकार की कुशलता का द्योतक है।

4.महाउम्मग जातकः–

बोधिसत्व पद्मपाणि के चित्र के बाईं ओर एक वितान चित्रित है। इसके एक ओर आसन पर बैठा राजा तथा दूसरी ओर भिक्षा की अपेक्षा में खड़े चार अभ्यर्थी चित्रित हैं। वितान में एक युवा भिक्षु चीवर पहने तथा भिक्षापात्र लिए हुए चार उपासिकाओं के

---

[5] देवला मित्रा, अजन्ता, पृ0–18
[6] अजय मित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृश्ठ–82
[7] यासदानी, अजन्ता, खण्ड–1 पृ0–13–14
[8] अजय मित्र शास्त्री, पूर्वोक्त पृ0–83
[9] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–1, पृ0–15

मध्य में खड़ा है। इस चित्र की पहचान महाउम्मग जातक के रूप में ली गयी है। जिसमें प्राज्ञ महोसध की पत्नी अमरा चार व्यक्तियों को भगा देती हैं, जो बुद्धिमान व्यक्तियों के रूप में छलना चाहते थे[10]।

5.चंपेय्य जातक:–

नागराज चंपेय्य के रूप में जन्में बोधिसत्व ने अपनी स्थिति से ऊबकर पृथ्वीलोक में एक बॉवी के ऊपर बैठकर तप करने लगे, एक सपेरें ने उन्हें पकड़कर अपनी आजीविका का साधन बना लिया। एक बार वही सपेरा वाराणसी के राजा उग्रसेन के दरबार में चंपेय्य का नाटक दिखा रहा था, तभी चंपेय्य के वियोग से दुःखी नागराज्ञी सुमना ने वहॉ आकर उग्रसेन से चंपेय्य को मुक्त करने की प्रार्थना, जिस पर उग्रसेन ने सपेरें से चंपेय्य को स्वतंत्र करा दिया। बोधिसत्व ने इस उपकार के बदले राजा उग्रसेन का नागलोक में एक सप्ताह तक खूब अतिथ्य–सत्कार किया। चित्र में ऊपरी बाईं तरफ चंपेय्य महल में रानी यमुना सहित बैठे हैं। दूसरें दृश्य में चंपेय्य के वियोग में व्यथित सुमना चित्रित है। अगले दृश्य में राजा अग्रसेन सॉप का नृत्य देख रहे हैं तथा सुमना व उसका पुत्र भीड़ में मानव रूप में उपस्थित हैं, अन्तिम दृश्य में राजा तथा घटाटोप से युक्त मानवरूप में उपदेश करते चंपेय्य चित्रित है। राजा का चित्र नष्ट हो गया है। नाग की स्त्री– पुरूष बोधिसत्व के प्रति आदर व्यक्त कर रहे हैं[11]। कथानक के चित्रांकन में अत्यन्त रंगों का प्रयोग है, किन्तु सहज दृश्य–संयोजन के कारण कथावस्तु प्रवाहमान रूप से प्रदर्शित है।

गुफा संख्या–16

अजन्ता की यह गुफा गुप्त–वाकाटक कला का महत्वपूर्ण भण्डार है। इसमें बुद्ध के जीवन तथा जातक कथाओं से सम्बन्धित कथानकों का चित्रांकन किया गया है। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्रों में माया का स्वप्न, असित ऋषि से चर्चा, गौतम का विद्याभ्यास, वृद्ध तथा तीन अन्य निमित्तों का दर्शन, सुजाता की खीर, धर्मोपदेश, नन्द की दीक्षा आदि का समावेश है। जातक कथाओं में केवल सुतसोम, महाउम्मग तथा हस्तिजातक का अंकन है।

1.हस्तिजातक:–

हस्ति के रूप में जन्में बोधिसत्व द्वारा भूखें यात्रियों के लिए अपने शरीर का त्याग करने की कथा का चित्रांकन गुफा के पहले बरामदें में तुषित स्वर्ग के चित्र के ठीक पीछे किया गया है। चित्र में यात्रियों का एक समूह चित्रित है, जिनके बिखरे केश तथा फूले पेट भूख से व्याकुलता प्रदर्शित कर रहे हैं। उनकी पीठ पर समान लदा है तथा वे पहाड़ पर खड़े एक सफेद हाथी की ओर इशारा कर रहे हैं। दूसरे दृश्य में दयालु हाथी मरा पड़ा है। दो यात्री बैठे–बैठे छूरियों से उसका मॉस कॉट रहे हैं। कुछ व्यक्ति मॉस भूनतें, खाते तथा कुछ पानी लाते चित्रित किये गये हैं[12]।

2.महाउम्मग जातकः– [13]

इस जातक कथा में दैवी शक्ति सम्पन्न महासंघ नामक बालक की कथा है, जिसके द्वारा एक बच्चे की दो दावेदार माताओं का न्याय, एक रथ के स्वामियों का न्याय एवं दो महिलाओं के मध्य सूत के स्वामित्व का निर्णय किये जाने का कथानक चित्रित किया गया है। मण्ड़प में प्रवेश करने पर बाईं ओर बने कक्ष के द्वार के दाईं ओर महाउम्मग की कथा चित्रित है। चित्र के ऊपरी भाग में महासंघ के तालाब तथा कुछ लोगो से चर्चा करते हुए महासंघ का चित्रण है। इसके नीचे महासंघ द्वारा सच्ची माता का निर्णय करने का प्रसंग चित्रित है। बच्चे को काटकर बॉट लेने का निर्णय देने पर बच्चे की वास्तविक माँ ने अपना अधिकार वापस ले लिया, इसी प्रसंग का यहॉ चित्रण है। इसके निचले दाये भाग एक रथ के वास्तविक स्वामित्व के निर्णय का प्रसंग चित्रण है। इसी भित्ति के एक कुड्यस्तम्भ पर इस कथा का तीसरा प्रसंग चित्रित है, जिसमें महासंघ के तालाब में स्नान करती महिला का सूत अंश महिला ने चुराकर उसे अपना बताने लगी, परन्तु महासंघ ने वास्तविक स्वामिनी का उसका सूत दिला दिया।

गुफा–संख्या–17:–

अजन्ता की अन्य गुफाओं की अपेक्षा इस गुफा में चित्र विस्तृत अंकन व भव्यता के साथ अधिक्य रूप से बने हैं। बुद्ध से सम्बन्धित चित्रों की अपेक्षा जातक कथाओं के चित्रांकन को प्रमुखता मिली है। इसी गुफा के चित्र सर्वाधिक सुरक्षित दशा में हैं।

---

[10] अजय मित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–85, देवला मित्र, अजन्ता, पृ0–21
[11] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–38–43,
[12] मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, आ0–13
[13] वही, आ0–9–10, फलक–50

1.विश्वन्तर जातकः–

ऐसा प्रतीत होता है कि पहले चित्रकार ने इस जातक कथा का अंकन बरामदें की दीवार पर बनाना आरम्भ किया था, परन्तु पर्यात स्थान न होने के कारण इसे पुनः सभामण्डप की बाईं भित्ति पर चित्रित किया गया। इस जातक की कथा में विश्वन्तर नाम से जन्में बोधिसत्व का विवरण है, जिसके अनुसार विश्वन्तर ने अपनी करूणामयी दानशील प्रवृत्ति के कारण उस हाथी तक को दान दे दिया था, जिसके प्रभाव से राज्य में अकाल के समय भी वर्षा होती थी। इस पर जनाक्रोश के चलते विश्वन्तर को सपरिवार देश से निकाल दिया गया था। ऐसी दशा में भी विश्वन्तर ने दान में अपनी सन्तानों सहित पत्नी तथा शेष सम्पत्ति भी दान में दे दी। बच्चों को दान में लेने वाला लोभी ब्राह्मण जूजक बच्चों को बेचने वाला निकलता है तथा स्वयं विश्वन्तर के पिता ने द्रव्य देकर उससे बच्चों को अपने संरक्षण में ले लिया था। विश्वन्तर की पत्नी माद्री जिस ब्राह्मण को दान में दी गयी, उस समय शक्र(इन्द्र) जिन्होंनें विश्वन्तर की परीक्षा लेने के लिए ही सारा नाटक रचा था तथा विश्वन्तर से प्रसन्न होकर उन्होंनें सब कुछ उन्हें वापस कर दिया। बरामदें के अंकित दृश्यों में विश्वंतर अपनी रानी के साथ महल में मधुपात्र लिए बैठे हैं, उनके देश निकाले के समाचार से सर्वत्र विषाद छाया हुआ है। दूसरे दृश्य में विश्वंतर दान दे रहा है। दानार्थियों के रूप में साधु–सन्यासियों, भिक्षुकों तथा विभिन्न वेश–भूषा के लोगो की भीड़ इकट्ठा है इन सबके चेहरे का भाव देखने योग्य है। सभा मण्ड़प में यही कथा विस्तार पूर्वक अंकित है[14]। चित्र में अपने माता–पिता से विदा लेते विश्वंतर, चार अश्वों वाले रथ में हाट–वीथिका से गुजरते विश्वंतर, आश्रम में निवास, जूजक को बच्चों का दान, विश्वंतर के पिता का बच्चों को प्राप्त करना, माद्री तथा विश्वतंर का नगर लौटना, आदि दृश्यों का संयोजन प्रशंसनीय है। यद्यपि चित्रों की दशा अच्छी नहीं है, तथापि दृश्यों के विवरण सुलभता से स्पष्ट होते हैं[15]। शारीरिक अवयवों के रेखांकन, चरित्र के अनुरूप चेहरों के भावों कों प्रकट करने में चित्रकार सफल है।

2.षड्दन्त जातकः–

इस जातक कथा की चर्चा गुफा सं0–10 के चित्रों के प्रसंग में पूर्व में ही हो चुकी है। गुफा सं0–17 में यह कथा प्रवेश–द्वार के बाईं ओर की भित्ति पर चित्रित है। यद्यपि चित्र का कुछ भाग फीका हो गया है, तथापि मुख्य दृश्य अच्छी तरह पहचाने जा सकते हैं। इनमें ऊपर बाईं तरफ रानी का महल, सफेद हाथी तथा उसका यूथ, गजदूत की जलक्रीडा, शिकारी द्वारा शर–संधान तथा दॉतों को देखकर व्यथित रानी द्वारा राजा के हाथों में प्राण त्याग देना आदि अंकित है। चित्रकार ने चित्रों को प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से यद्यपि पृष्ठभूमि को भी विविध विस्तारों से चित्रित किया है, तथापि गुफा सं0–10 को सातवाहनकालीन चित्र के समान सफलता नहीं मिली है[16]।

3.महाकपि जातकः–

छद्दन्त जातक के आगे यह कथा चित्रित है। इस कथा के अनुसार एक बार बोधिसत्व वानर रूप में जन्में तथा अपने झुण्ड़ के साथ गंगा तट पर आम्र वृक्षों पर रहते तथा धमाचौकडी मचातें थे। राजा ब्रह्मदत्त ने सभी वानरों को पकड़ने का आदेश दे दिया, तब बोधिसत्व महाकपि ने एक बाँस की सहायता से नदी के ऊपर पुल बनाकर वानरों को दूसरी तरफ भगाने की योजना बनायी, परन्तु बाँस छोटा पड़ गया, इस पर महाकपि ने अपने शरीर के द्वारा बाँस की लम्बाई पूरी की। सभी वानर उनके ऊपर होकर दूसरी तरफ जाने लगें, तभी वानर रूप में उनका प्रतिद्वन्दी देवदत्त इतने जोर से उनके ऊपर कूदा कि आघात से महाकपि का ह्दय विदीर्ण हो गया। महाकपि के त्याग से राजा ब्रह्मदत्त बहुत प्रभावित हुआ तथा महाकपि को ससम्मान नीचे उतरवाकर उनसे उपदेश लिया। चित्र में बाईं ओर नदी चित्रित है। नदी में मछलियॉ, अन्य प्राणी तथा स्नान करतें मनुष्य चित्रित हैं। राजा व धर्नुधारी घोड़े पर सवार है। धनुर्धारी बन्दरों पर तीर चला रहें हैं। ऊपर वानर महाकपि के ऊपर होकर दूसरी तरफ भाग रहें हैं। नीचे राजा के सेवक एक कम्बल पकड़े हैं। सम्भवतः इसी कम्बल के माध्यम से महाकपि को नीचे उतारनें की घटना के चित्रण का प्रयास किया गया है। वातायन के ऊपर बोधिसत्व राजा को उपदेश दे रहे है[17]।

4.हस्ति जातकः–

भित्ति के शेष भाग पर हस्ति जातक का चित्रण है। गुफा सं0–16 के प्रसंग में इस कथा की चर्चा हो चुकी है। यहॉ चित्र का काफी भाग अस्पष्ट है। मृत हाथी का मॉस निकालते –खाते भूखें यात्रियों का अंकन किया दिखाई देता है[18]।

---

[14] मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त,फ0–58, यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–43

[15] मदनजीत सिंह फलक–60–61, यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–43 फलक–19–26

[16] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–30,फलक–10–12, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त,फलक–3,66

[17] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–33,फलक–11 बी0, 12 सी0, ई0, 13 ए0, सी0

[18] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–35, फलक–14

5.हंस जातकः–

इस कथा का विवरण भित्ति के साथ लगे कुड्य–स्तम्भ के ऊपरी भाग तक हुआ है। हंस के रूप में बोधिसत्व अन्य हंसों के साथ झील में रहते थे। एक शिकारी ने उन्हें एक अन्य हंस के साथ पकड़कर वाराणसी के राजा को बेच देता है। जहाँ बोधिसत्व राजा को उपदेश देते हैं। चित्र में झील से उडते हंस तथा उनकी भगदड़ अत्यंत मोहक है। दूसरे दृश्य में राजा–रानी परिचारकों सहित बोधिसत्व से उपदेश सुनतें चित्रित हैं[19]।

6.सुतसोम जातकः–

राजा सुदास के सिंहनी से उत्पन्न पुत्र सौदास में नरमाँस भक्षण की वृत्ति थी। एक बार उसने इसी क्रम में कुरू राजकुमार सुतसोम के रूप में जन्में बोधिसत्व को खाने के लिए पकड़ लिया था, परन्तु सुतसोम के उपदेश से उसकी यह घृणित वृत्ति सदैव के लिए समाप्त हो गयी। पालि जातक कथा इससे कुछ भिन्न है[20]। यहॉ सौदास को पूर्वजन्म में पक्षी बताया गया है तथा इसी पूर्व वृत्ति के कारण वह नरमॉसभक्षी है। चित्रकार ने गुफा के अन्तराल की बाईं भित्ति तथा बाईं ओर से पिछलें बरामदें की कोठरी के ऊपरी भाग पर 'जातकमाला' में वर्णित कथानक का चित्रण किया है[21]। कथा दाईं ओर के निचले भाग से प्रारम्भ होती है। सबसे नीचे का शिकार के लिए वन में भटका राजा सुदास घोड़े पर सवार विभिन्न आभूषणों तथा शस्त्रास्त्रों से युक्त चित्रित है। ऊपर की बाईं ओर हिरण तथा उनका पीछा करता हुआ शिकारी कुत्तें हैं। दूसरें दृश्य में अकेले सोये राजा के पैर चाटती सिंहनी चित्रित है। यहीं कुछ ऊपर एक चट्टान पर राजा तथा सिंहनी बैठें हैं। ऊपर दायीं ओर भरें बाजार में से महल के द्वार की ओर बढ़ती सिंहनी तथा स्तब्ध लोग चित्रित हैं। सबसे दाईं ओर गोद में बालक लिए राजा तथा सिंहनी है। नीचे शस्त्रास्त्र और विद्याभ्यास करता सौदास, उसके बाईं ओर सौदास का राज्याभिषेक तथा नरमॉसभक्षण के दृश्य हैं। शिकार के दृश्य के ठीक ऊपर सौदास पाकशाला से भागा है। शिकार के दृश्य के ठीक ऊपर सौदास की पाकशाला से भागा एक व्यक्ति तथा ऊपर सौदास से उसकी वृत्ति त्यागने की प्रार्थना करते लोग चित्रित हैं। शस्त्रास्त्राभ्यास के दृश्य के नीचे सौदास पर आक्रमण करते सैनिक हैं। बोधिसत्व सुतसोम कमल झील से पकड़े जाने पर सुदास द्वारा कन्धे पर बैठाया हुआ अंकित है।

7.शरभ जातकः–

एक बार बोधिसत्व शरभ हरिण के रूप में जन्में। एक बार वाराणसी का राजा शिकार के लिए उनका पीछा करते समय गड्ढ़े में गिर गया, जिस पर शरभ ने पहले पत्थर ढ़ोकर राजा के वजन का अभ्यास किया।, फिर राजा को पीठपर ढ़ोकर गड्ढे से बाहर निकाला। चित्र में आखेटक मध्य में अंकित है।दाईं ओर शरभ मृग पत्थर उठाकर राजा को उठाने का अभ्यास कर रहा है। अंतिम दृश्य में वह राजा को अपनी पीठ पर बैठा कर ला रहा है[22]।

8.मातृपोषक जातकः–

शरभ जातक के नीचे मातृपोशक जातक का अंकन है। एक बार बोधिसत्व एक अंधी हंथिनी के पुत्र के रूप में जन्में थें, मॉ की सेवा करना उनका प्रिय कार्य था। एक बार जंगल में एक आदमी भटक गया था, जिसे मातृपोषक ने जंगल के बाहर पहुचा दिया था, परन्तु उस कृतघ्न व्यक्ति ने राजा के हाथी के मरने पर मातृपोशक का पता देकर उन्हें पकड़वा दिया। दुःखी मातृपोशक ने मॉ की चिन्ता में अन्न–जल त्याग दिया। सारी वस्तुस्थिति जानने पर वाराणसी के राजा ने उन्हें मुक्त करवा दिया। हाथियों के व्यापार–व्यवहार में यह चित्र षड़दन्त जातक के समकक्ष है[23]।

9.मत्स्य जातकः–

शरभ जातक के चित्रांकन के आगे मत्स्य जातक की कथा चित्रित की गयी है। इस जातक कथा में मत्स्य रूप में जन्में बोधिसत्व एक बार सूखा पड़ने पर अपने जॉति बंधवों की रक्षा के लिए इन्द्र से प्रार्थना करते हैं। पानी सूख जाने पर पक्षी आसानी से इनका शिकार करने लगतें हैं। मत्स्य की प्रार्थना करने पर वर्षा होती है। इस चित्र का केवल एक भाग शेष है, जिनमें एक बडी मछली को घेरे छोटी मछलियॉ तथा जल पक्षियों से युक्त एक सरोवर चित्रित है[24]।

---

[19] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–40–41,फलक–17 ए0,बी0
[20] अजयमित्र शास्त्री, पूर्वोक्त, पृ0–96
[21] यासदानी, पूर्वोक्त, खण्ड–4, पृ0–40, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–65
[22] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–70, फलक–38'40ए, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–38
[23] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–73, फलक–44–46
[24] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–76, फलक–47–48, मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–76

10.श्याम जातकः–

मण्ड़प की दायीं भित्ति के आरम्भिक भाग पर श्याम जातक के चित्र अंकित है। इस जातक का अंकन सातवाहनकालीन दसवीं गुफा में भी मिलता है। यहॉ पर यह कथा तीन दृश्यों में चित्रित है। सबसे ऊपर कमल झील के तट पर मटके सहित श्याम अंकित है। निचले भाग में कॉवड़ में अपने माता–पिता को ढोता तथा मध्य भाग में श्याम को उठाकर ले जाता राजा तथा राजा को उपदेश देता श्याम चित्रित है[25]।

11.महिष जातकः–

श्याम जातक के आगे महिष जातक का चित्रांकन है। इस कथा के अनुसार महिष के रूप में जन्में बोधिसत्व को एक बन्दर बहुत तंग करता था, परन्तु वे उसे कुछ न कहते थे। एक दिन एक अन्य महिश वहॉ आता है तथा बन्दर अपनी आदत के अनुसार उसे भी तंग करता है। इस पर महिष ने उसे मार ड़ाला। चित्र के निचले भाग में बोधिसत्व की ऑखें बन्द करता बन्दर अंकित है। ऊपर दूसरें दृश्य में महिष द्वारा फेंकें गये बन्दर की ऑखों में भय का सफल प्रर्दशन हुआ है[26]।

12.शिवि जातकः–

प्रसाधिका दृश्य वाले कुड्यस्तम्भ के आगे भित्ति पर शिवि जातक का चित्रण किया गया है। इस जातक कथा के अनुसार राजा शिवि ने किसी के भी मॉगने पर अपने शरीर का कोई भी अंग देने की प्रतिज्ञा की थी। एक बार शक्र ने परीक्षा लेने के लिए उनके नेत्र मॉग लिए। शिवि ने सहर्ष अपने नेत्र दे दिये। उनके त्याग से प्रभावित शक्र ने अपने नेत्र वापस कर दिए। चित्र में शिवि दरबारियों तथा स्त्रियों के मध्य में बैठे प्रतीज्ञा ले रहे हैं। बाईं तरफ ऊपर शक्र चित्रित हैं दायीं ओर असह्य पीडा सहते हुए शिवि चित्रित हैं। इसके ऊपर राजा द्वारा बनवाया गया सत्र और कमल सरोवर है, जिसमें कमल पर बैठे शक्र तथा शिवि अंकित हैं। पहले दृश्य के ऊपर समारोहपूर्वक शिवि का राजधानी में लौटना चित्रित है[27]।

13.ऋक्ष जातकः–

इस जातक कथा में एक रीछ रूप में जन्में बोधिसत्व द्वारा अपने प्राणों के मूल्य पर जाल में फसें मृग की रक्षा करने का प्रसंग वर्णित है। इस कथा का चित्रण मण्डप की सम्मुख भित्ति के भीतरी ओर दाईं तरफ की दो खिड़कियों के मध्य भाग में किया गया है। समय के साथ यह चित्र काला पड़ गया है, जिससे आकृतियॉ पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। तथापि कथा की प्रमुख घटनाओं की पहचान हो सकी है। शिकारी, उसके फैलाये जाल में फॅसा एक मृग तथा भालू द्वारा अपने पंजों से शिकारी को पकड़कर बचाया हुआ एक अन्य मृग, भालू पर बाण चलाता हुआ एक अन्य शिकारी और बाण लगने से घायल रीछ स्पष्ट दिखाई देते हैं[28]।

14. रूरू जातकः–

इस जातक कथा के अनुसार एक बार बोधिसत्व ने एक रूरू के रूप में जन्म लिया तथा एक डूबते मनुष्य के प्राणों की रक्षा की, परन्तु पुरस्कार के प्रलोभन में उसी मनुष्य ने उन्हें राजा के हाथों में पकड़वा दिया। मण्डप के सम्मुख दीवार के भीतरी ओर दरवाजे के बाईं ओर अंतिम दृश्य का समीकरण इस जातक के साथ किया गया है, परन्तु देवता मित्र जैसे विद्वान इस समीकरण से सहमत नहीं हैं। वस्तुतः चित्र में जातक कथा की केन्द्रीय घटना, बोधिसत्व द्वारा श्रेणी के पुत्र की नदी में डूबने से रक्षा का अंकन नहीं मिलता है। इसके विपरीत राजा द्वारा 'मृग' के विषय में सूचना के बदले पुरस्कार की घोषणा, राजा को मृग का पता बताते शिकारी, राजा को परिजनों और शिकारियों के साथ आखेट के लिए प्रस्थान, मृग को पकड़ने का प्रयत्न करते ही उसके हाथों का कट जाना तथा सम्मान पूर्वक रथ में बैठाकर लाये हुए मृग के साथ राजा के राजधानी में लौटने के दृश्यों का चित्रण रूरू जातक से समीकरण स्थापित करने में कठिनाई उत्पन्न करता है[29]।

15.न्यग्रोध मृग जातकः–

एक बार न्यग्रोध नामक मृग जातक के रूप में जन्में बोधिसत्व ने एक गर्भिणी हिरणी के प्राणों की रक्षा के लिए स्वयं वाराणसी के राजा की पाकशाला में उपस्थित हो गये। रसोइयें से पता चलने पर न्यग्रोध के त्याग से प्रभावित होकर सभी पशुओं का अभयदान दे दिया। तभी से वह स्थान 'मृगदाव' के नाम से (वर्तमान सारनाथ) प्रसिद्ध है। गुफा के द्वार तक भित्ति के शेष भाग में इस कथा का चित्रण है। द्वार तथा वातायन के मध्यवर्ती भाग में नीचे की ओर उपवन के मृगों का समूह तथा ऊपरी

[25] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–78–79
[26] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–79–80
[27] मदनजीत सिंह, पूर्वोक्त, फलक–63, यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–59–60, देवला मित्रस, पूर्वोक्त, पृ0–62, फलक–11
[28] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–96
[29] यासदानी, पूर्वोक्त, पृ0–102–103

भाग में राजा रसोईघर में वध के लिए प्रस्तुत न्यग्रोध चित्रित है। दाईं ओर विस्मित रसोइए द्वारा राजा को इस घटना की सूचना देने का दृश्य चित्रित है। इसके आगे सिंहासनासीन बोधिसत्व भूमि पर बैठे राजा–रानी को उपदेश देते दृष्टिगत है। गवाक्ष के ऊपर अंकित दृश्य में एक स्तूप बोधिसत्व के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते पशु–पक्षियों का अंकन है[30]।

इस प्रकार अजन्ता के वाकाटककालीन चित्रों में बौद्ध जातकों का अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रण करके बोधिसत्व की लीलाओं के माध्यम से बौद्ध धर्म के मूल में स्थित प्रज्ञा और करुणा की भावना को प्रदर्शित किया गया है।

[30] देवला मित्रा, पूर्वोक्त, पृ0–63–64